P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजनीति में विघटित होते मूल्य

सारांश

आज राजनीति अपना स्वच्छ रूप खोकर, अजगर जैसा रूप बना चुकी है। राजनीति में ईमानदारी, मानवता, नैतिकता का तो दूर–दूर तक रिश्ता ही नजर नहीं आता है। समाज के विभिन्न अंगों को बाँटकर लोक कल्याण की भावना को राजनीति ने त्याग दिया है। राजनीति का स्वरूप भ्रष्ट नेताओं द्वारा झूठे वादों, दंगों, गुण्डागर्दी, हत्या, हड़तालों आदि से विषाक्त हो चुकी हैं। राजनेता अपनी कुर्सी के बल का प्रयोग आम जनता को नचाने के लिए करती है। जब तक लोग उनकी मर्जी के साथ नाचते हैं, तब तक सब ठीक रहता है, अन्यथा विरोध करते ही, उन्हें जेल की हवा खिला दी जाती है। आज की भ्रष्ट व मूल्यहीन राजनीति में नेता लोग अपनी मनमानी करने से पीछे नहीं हटते हैं, चाहें उन्हें कोई भी तरीका क्यों न अपनाना पड़े ये लोग जनता को भड़काने के लिए रिश्वत, शाम, दाम, दण्ड, भेद आदि सभी नीतियों को अपनाते हैं।

मुख्य शब्द : भ्रष्टाचार, हुकूमत, मूल्यहीनता, रणनीतियाँ, अनैतिकता।

संगीता
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक

प्रस्तावना

भ्रष्ट का अर्थ है – ''गिरा हुआ, जो खराब हो गया हो, पतित, बहुत बिगड़ा हुआ, दूषित व बदचलन।''[1]

जहाँ ये शब्द दिखाई देते हैं, उसे राजनीति भ्रष्टाचार कहते हैं। राजनीति में आकर भ्रष्ट लोग भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। हमारे समाज में भ्रष्टाचार की जड़े इतनी मजबूत हो चुकी है कि उसे निकालने में कई सदियाँ लग जायेगी। आज राजनीति अपना स्वच्छ रूप खो चुकी है। अच्छे लोग इस कुचक्र में फँस जाते हैं, जहाँ से उनका निकल पाना मुश्किल हो जाता है। मूल्यहीन व भ्रष्ट राजनेता सदाचार और नैतिकता की बातें करते रहते हैं, परंतु समय आते ही चाल चल जाते हैं। कोई भी खबर सत्य पर आधारित न होकर भ्रष्ट राजनेताओं के झूठ पर टिकी रहती है। वर्तमान राजनीति में राजनेताओं को व्यक्तिवादी बना दिया है। चुनावों में मतदाताओं की घटती प्रतिशत इसी बात का प्रमाण है।

अध्ययन का उद्देश्य

भ्रष्ट राजनीति देश को पतन की ओर ले जा रही है। देश में अनीति लागू करना, देश को गलत लोगों के साथ मिलकर बेच देना, आम जनता का शोषण करना, साम्प्रदायिक दंगे करवाना, देश के नौजवानों को गलत दशा व निर्देश देना, धोखाधड़ी से धन एकत्र करना आदि ये सभी बातें राजनीतिक भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

विश्वनाथप्रसाद तिवारी ने जहाँ–जहाँ राजनीतिक पाखण्ड, अंधकार और अन्याय दिखाई देता है, वहाँ अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया है। व्यक्ति अपने आपको शून्य और खोखला महसूस करने लगा है। कवि ने इस आक्रोश को बिना डरे, सीना चौड़ा करके लोकतंत्र की बिना प्रवाह किए अपने विचार व्यक्त किए हैं –

तानाशाह
मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता
मुझे तुमसे पद नहीं चाहिए
मुझे तुमसे सुविधा नहीं चाहिए
मुझे तुमसे दूसरों का हक नहीं चाहिए
तानाशाह
मैं तुम्हारी परवाह नहीं करती
मुझे चाहिए केवल
पेट भरने की रोटी
और शरीर ढकने का कपड़ा
और सिर छुपाने की जगह
तानाशाह

मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता
मैं विचार कर सकता हूँ
मैं भूखा रह सकता हूँ
मैं इन्तजार कर सकता हूँ
मैं इंकार कर सकता हूँ
तानाशाह
मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता[2]

कवि इस भ्रष्ट समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं। आम जन की जिन्दगी सिर्फ रोजी–रोटी का जुगाड़ करने में सारा समय व्यतीत हो जाता है। भारतीय राजनीति पूर्णतयः भ्रष्ट हो चुकी है। आज हमारे समाज में बेईमानी, भ्रष्टाचार, स्वार्थलोलुपता और लूट–खसोट का बोलबाला है। जैसा कि कवि ने लिखा है –

भाग्य और सुराज के नाम पर
उसे याद है उसने पाँच बार वोट दिया
और पाँचों बार उसका उम्मीदवार हार गया
हर बार विजयी उम्मीदवार ने उसे आश्वासन दिया
खाने–पहनने को लिखित आश्वासन दिया
मगर उसका पेट नहीं भरा[3]

समाज के नेता राजनीतिक कार्यकर्त्ता व राष्ट्र के सेवक न समझकर मालिक समझने लगते हैं तो यह स्थिति राजनीतिक विघटन के लिए अग्रसर कर रही होती है। देश हित के लिए सम्पत्ति का प्रयोग न करके व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूर्ण करना नेताओं का पहला काम होता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद लोगों में कुछ आशा की किरण आई, लेकिन भ्रष्ट नेताओं ने आश्वासनों और उनके द्वारा दिखाए गए सपनों ने राजनीति का अर्थ ही बदल दिया। लोकतंत्र के होते हुए भी उचित सरकार का गठन नहीं हो पा रहा है। देश के नेताओं के पास वोटों की भरमार बहुत ज्यादा है। वे देश की राजनीति को प्रतिदिन दूषित कर रहे हैं। राजनीति को कवि सुधारना चाहते हैं, लेकिन समाज इसे करने में नाकाम हो जाता है। इसलिए कवि कहते हैं कि –

बुद्धिजीवी भी सड़क पर आ सकते हैं
परंतु क्या करें यह सरकार ठीक नहीं है
माना कि यह लोकतंत्र है
और हम सुधारना चाहते हैं यह समाज
परंतु इधर ठाकुरों के वोट बहुत हैं [4]

समकालीन राजनीति भ्रष्टाचार पर टिकी हुई है। राजनीतिक पार्टी कानून की रक्षक पुलिस और राजनीतिक पार्टी सभी मिलकर भ्रष्टाचार को प्राथमिकता दे रहे हैं। प्राचीन समाज में समाज का विकास होना थोड़ा मुश्किल था, लेकिन उस समय भ्रष्टाचार की समस्य इतनी गहरी नहीं थी। उस समय पर भ्रष्टाचार का स्वरूप ही अलग था। गरीब व्यक्ति के दुःख दर्द को अहमियत न देकर राजनीतिकों व अफसरों को अनुचित तरीके से सभी सुविधाओं को उपलब्ध कराना भी भ्रष्टाचार है। राजनीति ने भ्रष्टाचार और अन्याय को प्रश्रय दिया है। आज अपराधी और भ्रष्टाचारी व्यक्ति को राजनीतिज्ञ सुरक्षा प्राप्त है। न्याय और कानून के रक्षक ही भक्षक बनके इनको तोड़ेंगे तो अनैतिक कार्यों से बढ़ावा मिलना स्वाभाविक है। पूंजीपतियों से चन्दा लेने के लालच में सरकार उन्हें समाज में खुले आम ब्लैक–मार्किटिंग एवं 'स्मगलिंग' का धन्धा करने में मदद करती हैं। उन्हें खुला छोड़कर देश का अहित करते हैं। धन के लालच में पूंजीपतियों के इशारों में चलकर अपराध को बढ़ावा देना आज के राजनेताओं का शोक बन चुका है। यह मूल्यहीनता नहीं है तो फिर क्या है। ये सब राजनीतिक विघटन के लिए उत्तरदायी है। बाढ़, अकाल और समाज के परोपकारी कार्यों के लिए समाज कल्याणकारी योजनाओं को बनाया अवश्य जाता है, लेकिन भ्रष्टाचारी नेता इनका लाभ साधारण जनता को न देकर स्वयं लेते हैं। किसी की हत्या होने पर रूपया उन्हें न देकर भ्रष्ट अधिकारियों की जेबों में ही रहता है। परिवार के लिए केवल करूणा शब्द रह जाता है। यही लोकतंत्र की पहचान रह गयी है। नीचे से लेकर ऊपर तक लोगों को भ्रष्टता ने अपने घेरे में लिया है। सभी ढोंगी चेहरों पर मुखौटे लगाए हुए हैं।

''भ्रष्टाचार में मुख्य बात होती है – आर्थिक लाभ की रूपया–पैसा, धन–दौलत, पद–प्रतिष्ठा एवं सम्मान आदर भी इसमें जुड़े होते हैं। केवल अपने लिए ही नहीं अपने घर वालों और सगे सम्बन्धियों के लिए भी...। इन सुविधाओं की प्राप्ति के लिए जो अनैतिक, गलत और निन्दनीय कार्य किये जाते हैं, वे सब भ्रष्टाचार की श्रेणी में आते हैं।''[5]

हमारे देश के कर्णधार ही भ्रष्टाचार के पोषक बन गए हैं। नेताओं की आचार संहिता में रिश्वतखोरी व उत्पीड़न आम बात बन गई है। लोकतंत्र के होते हुए भी सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी उच्च पदों को नहीं प्राप्त कर पाते हैं। कवि अपने विचारों द्वारा व्यक्त करते हुए कहता हैं –

जो गुलाम नहीं है उन पर संदेह और उनकी हत्या के लिए
मिलती है उन्हें बहुत ही
बहुत मामूली करुणा जैसी पगार
यही है इस लोकतंत्र का सबसे बड़ा रोजगार[6]

राजनीति का अर्थ 'राज' को प्राप्त करने की नीति मात्र बनकर रह गया है। हमारे देश में भ्रष्ट कार्य इतना अधिक हो गया है जिसका अन्दाजा हम नहीं लगा सकते हैं। राजनीति का भ्रष्ट रूप अजगर का व्यापक रूप बनता जा रहा है। मानवता, ईमानदारी जैसे शब्द राजनीति से खत्म होकर बेईमानी और भ्रष्टाचार ने ले लिए हैं। सत्ता को पाने की चाह में विश्वासघात किए जाते हैं। सत्ता में आने के बाद नेताओं का अगले चुनाव तक अता–पता भी नहीं होता है। लोकतांत्रिक देश में चुनावों का घटता प्रतिशत इसी का कारण है कि आम जनता राजनीति से घृणा करने लगती है। जो राजनेता जितनी ज्यादा चमक रखता है और लूटपाट मचाता है वही इस समय चारों तरफ अपनी वाह–वाह करवा रहा है। कवि अपनी कविता द्वारा आज के समय के लुटेरों को संबोधित करते हुए कहते हैं –

साथियो, यह एक लुटेरा अपराधी समय है
जो जितना लुटैरा है वह उतना ही चमक रहा है
और गूँज रहा है[7]

ब्रिटिश हुकूमत को बदनाम किया गया कि उन्होंने हमारे देश का शोषण किया, मनमानी

शासन प्रणाली को बनाया व लागू किया, परंतु हमारे देश के आज के नेता भी तो देश की जनता का शोषण ही कर रहे हैं। जनता का सेवक कहने वाले इन नेताओं को अरूण कमल ने अपनी कविता से करारा व्यंग्य किया है –

मैं तो बस यूँ ही देख रहा था कि
कैसे रहते थे साहब, कैसा था साहेब का बिछावन
अपने मंत्री जी का बेड
अब हम गुलाम नहीं।[8]

आज राष्ट्र, राष्ट्रीयता, त्याग, धर्म, सत्य और मानवता आदि शब्द अपनी पहचान व मूल्य खो चुके हैं। ऊपरी स्तर पर ये शब्द अच्छे लगते हैं, परंतु अब ये शब्द भीतर से कमजोर और खोखले नजर आने लगे हैं। राजनीति में झूठ, जातीयता और सोने–चांदी से भरी तिजोरी को ज्यादा अहमियत दी जाती है। देश के नेता अपराधियों से मेल–जोल रखते हैं। गुंडों के बल पर ही सत्ताधारी शासकों की राजनीति चल जाती है। गुंडों को नेताओं ने सुरक्षा कवच दे रखा है। अरूण कमल की कविताओं ने समाज के सामने ऐसी दरिदंगी और सत्ताधारियों पर व्यंग्य किया है –

जा चुका था सी० एम० किडनैपर
से मिल कर जो इस गली के अपने पुश्तैनी मकान में छिपा पड़ा था इन दिनों
एक टाँग तोड़ कर।[9]

पहले के समय में राजनेताओं में राष्ट्रवाद की भावना कूट–कूटकर नजर आती थी। नेता पहले राष्ट्र के बारे में सोचते थे। आजकल के नेता सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं। एक समय जवाहर लाल नेहरू ने अटल बिहारी वाजपेयी के बारे में कहा था कि ये लड़का एक दिन अवश्य भारत का प्रधानमंत्री बनेगा और ऐसा ही हुआ। इन्दिरा गाँधी को दुर्गा का अवतार अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था।

निष्कर्ष

इतने अच्छे विचार आज के समय में विरोधी नेता किसी के बारे में नहीं कहते हैं। आज के नेताओं की सोच देश के हित में होती ही नहीं है। सब पार्टी के नाम को अहमियत देते हैं। राष्ट्र में स्वार्थता और मूल्यहीनता ही खड़ी नजर आती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, पृ० 780*
2. *विश्वनाथप्रसाद तिवारी, शब्द और शताब्दी, मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता, पृ० 120–121*
3. *वही, कतवारू की मृत्यु पर, पृ० 174*
4. *कुमार अंबुज, अतिक्रमण, परंतु, पृ० 83*
5. *श्रीकृष्णदत्त भट्ट, सामाजिक विघटन और भारत, पृ० 682*
6. *उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, मक्खियों की आत्माएँ, पृ० 22*
7. *उदय प्रकाश, चंकी पांडे मुकर गया है, पृ० 32*
8. *अरूण कमल, पुतली में संसार, बिछावन, पृ० 33*
9. *अरूण कमल, पुतली में संसार, मुठभेड़, पृ० 35*